

शोध पत्र

राजस्थान में जल संकट की गंभीर चुनौती से निपटने के लिये उचित जल प्रबंधन का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

रामदेव गुर्जर (बी.ए., एल.एल.बी., एल.एल.एम.)
शोध छात्र, भगवंत विश्वविद्यालय, अजमेर, राजस्थान
मोबाईल नम्बर 9829238091

email ID :- ramdevkasanaksgcourt@gmail.com

DECLARATION:: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THIS JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PREPARED PAPER.. I HAVE CHECKED MY PAPER THROUGH MY GUIDE/SUPERVISOR/EXPERT AND IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ PLAGIARISM/ OTHER REAL AUTHOR ARISE, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. . IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL..

कबीरदास जी कहते हैं-

ऊँचै पानी ना टिकै, नीचै ठहराय।
नीचा होय सो भरि पिवै, ऊँचा प्यासा जाए।।
पानी केरा बुदबुदा, अस मानुष कि जान।
देखत ही छिपि जाएगा
ज्यों तारा परभात।।



भूमिका :-

डार्विन द्वारा सिद्धान्त दिया गया कि सबसे प्रथम जीव की उत्पत्ती जल से हुई है हमारे पुराणों व शास्त्रों के अनुसार भी प्रथम उत्पत्ती जीव की जल से हुई है जिसका पुराणों में प्रमाणिक भगवान विष्णु का प्रथमावतार "मत्स्य अवतार" हुआ था इस प्रकार जल सृष्टि का परम व आवश्यक तत्व है।

माना जाता है कि आज से 3.7 अरबो साल पहले, पृथ्वी टंडी हुयी थी, जिससे महासागरों का निर्माण हुआ था यहीं से जल का सिलसिला शुरू हुआ था और तब से लेकर अब तक, जल कई जीवित प्राणियों के जीवन का आधार बना हुआ है सृष्टि के पंचभौतिक पदार्थों में जल का सर्वाधिक महत्व है और यही जीवन का मूल आधार भी है इस धरती पर जल के कारण ही पेड़-पौधों, वनस्पतियों, बाग-बगीचों आदि के साथ प्राणियों का जीवन सुरक्षित है जीवन-सुरक्षण का मूल-तत्व होने से कहा गया है -"जल है तो जीवन है" या "जल ही अमृत है" वर्तमान में धरती पर जला भाव कि समस्या उतरोतर बढ़ रही है। धरती पर जीवन के अस्तित्व को बनाये रखने के लिये जल का संरक्षण और बचाव बहुत जरूरी होता है क्योंकि बिना जल के जीवन संभव नहीं हैं पूरे ब्रह्माण्ड में एक अपवाद के रूप में धरती पर जीवन चक्र को जारी रखने में जल मदद करता है क्योंकि धरती इकलौता अकेला ऐसा ग्रह है जहाँ पानी और जीवन मौजूद है। पानी कि जरूरत हमारे जीवन भर है इसलिये इसको बचाने के लिये केवल

हम ही जिम्मेदार है। अतएव जल-संरक्षण का महत्व मानकर संयुक्त राष्ट्रसंघ ने सन् 1992 में विष्व जल दिवस मनाने कि घोषणा कि जो प्रतिवर्ष 22 मार्च को मनाया जाता है धरती पर समस्त जीवन चक्र को बनाए रखने के लिए हवा, पानी और भोजन बहुत ही जरूरी है। जिसमें जल प्रकृति कि अनमोल धरोहर है बिना जल के इस धरती पर जीवन का होना संभव नहीं है। जल कि एक-एक बूँद सभी के लिए बहुत ही कीमती है। वैसे तो जल का भंडारण बहुत ही अधिक है अगर हम जल की बात करें तो पूरी पृथ्वी का 70 प्रतिशत भाग जल से भरा हुआ है पर इस 70 प्रतिशत भाग में से केवल 1 प्रतिशत भाग सभी के लिए उपयोगी है और इस 1 प्रतिशत भाग में से केवल 1 प्रतिशत भाग पीने योग्य है। इसलिए सभी को बहुत ही सोच समझ के साथ जल का सीमित उपयोग करना चाहिए भविष्य में जल कमी कि समस्या को सुलझाने के लिये जल संरक्षण ही जल बचाना है। भारत और दुनिया के दूसरे देशों में जल की भारी कमी है जिसकी वजह से आम लोगों को पीने और खाना बनाने के साथ ही रोजमर्रा के कार्यों को पूरा करने के लिये जरूरी पानी के लिये लंबी दूरी तय करनी पड़ती है। जबकि दूसरी ओर, पर्याप्त जल के क्षेत्रों में अपने दैनिक जरूरतों से ज्यादा पानी लोग बर्बाद कर रहे हैं। हम सभी को जल के महत्व और भविष्य में जल की कमी से संबंधित समस्याओं को समझना चाहिये। हमें अपने जीवन में उपयोगी जल को बर्बाद और प्रदूषित नहीं करना चाहिए तथा लोगों के बीच जल संरक्षण और बचाने को बढ़ावा देना चाहिए।

1. जल-चेतना हमारा दायित्व:-

हमारी प्राचीन संस्कृति में जल-वर्षण उचित समय पर चाहने के लिए वर्षा के देवता इन्द्र और जल के देवता वरुण का पूजन किया जाता था। इसी प्रकार हिमालय के साथ गंगा, यमुना, सरस्वती आदि नदियों का स्तवन किया जाता था। ऐतिहासिक साक्ष्यों से विदित होता है कि हमारे राजा एवं समाजसेवी श्रेष्ठिवर्ग पेयजल हेतु कुओं, तालाबों, पोखरों आदि के निर्माण पर पर्याप्त धन व्यय करते थे, वे जल-संचय का महत्व जानते थे किन्तु वर्तमान काल में मानव की स्वार्थी प्रवृत्ति और भौतिकवादी चिन्तन के कारण जल का ऐसा विदोहन किया जा रहा है जिससे अनेक क्षेत्रों में अब पेयजल का संकट उत्पन्न हो गया है। अतः हमारा दायित्व है कि हम जल को जीवन रक्षक तत्व के रूप में संरक्षण प्रदान करें।

स्रोत :- Authenr own skill

(माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा संचालित पुस्तक विज्ञान कक्षा-10 अध्याय 12 प्रमुख प्राकृतिक संसाधन पेज नम्बर 172,)

2. जल-संकट के दुष्परिणाम:-

हमारे देश में औद्योगीकरण, खनिज-सम्पदा का बड़ी मात्रा में विदोहन, भूजल का अतिषाय दोहन तथा कारखानों के विषैले रासायनिक अपशिष्टों का उत्सर्जन होने से जल-संकट उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। इससे न तो खेती-बाड़ी कि सिंचाई हेतु पानी मिल रहा है और न पेयजल कि उचित पूर्ति हो रही है। अब प्राचीन तालाब, सरोवर, एवं कुँए सूख रहे हैं, नदियों का जल-स्तर घट रहा है और भूगर्भ का जलस्तर भी लगातार कम होता जा रहा है जल संकट के कारण अनेक वन्य-जीवों का अस्तित्व मिट गया है और धरती का तापमान निरन्तर बढ़ रहा है। जल संरक्षण, पानी के उपयोग उपयोगिता को सीमित करना एवं सही तरीके से पानी का संरक्षण करना है। आज हमारे लिए जल संरक्षण हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया है शुद्ध जल एक सीमित संसाधन है जिसके लिए जल संरक्षण अति आवश्यक है जल स्थानीय उपयोग से लेकर कृषि एवं उद्योग तक एक मूलभूत आवश्यक अंग है जिसके द्वारा यह सभी कार्य सफलतापूर्वक किए जाते हैं अतः इस प्राकृतिक संसाधन का संरक्षण करना हमारे लिए अति आवश्यक है।

मानव आबादी बढ़ने के कारण पृथ्वी के जल पर एक गहरा प्रभाव पड़ा है जिससे अधिक मात्रा में जल दूषित हो जाता है जो पीने योग्य नहीं रहता है नदी तालाब झील जलाशय एवं भूजल के जल के दुरुपयोग के कारण आज हमें भीषण जल संकट का सामना करना पड़ रहा है और शायद आने वाले समय में यह संकट और भी बढ़ जायेगा जिससे मानव जाति का विनाश होने की कगार तक पहुँच जायेगा।

3. जल प्रदूषण के कारण :-

- उद्योगों से निकलने वाले विषैले रासायनिक अपशिष्ट पदार्थ, कचरा, पोलिथीन और अन्य गंदगी जल में मिलने प्रदूषित हो जाता है। गाँव अथवा शहर की गन्दी नालियों का पानी जलाशय एवं नदियों में गिरने से भी जल प्रदूषित हो रहा है।
- नदियों एवं छोटे तालाबों में कपड़े धोने, नहाने, बर्तन साफ करने, गंदगी को इनमें डालने, मवेशियों को नहलाने, मल-मूत्र त्याग ने, वाहनों को धोने आदि से दूषित हो जाता है
- फसलों के अधिन उत्पादन के लिए प्रयुक्त की गई रासायनिक खाद एवं कीटनाशक दवाएँ (पेस्टीसाइड्स) वर्षा के जल के साथ नदियों या तालाबों में पहुँच कर जल को प्रदूषित करते हैं।
- समुद्री जल का प्रदूषण-नदियों के दूषित जलों का समुद्र में मिलने से समुद्री जल प्रदूषित हो जाता है। समुद्र में परमाणु विस्फोटों के परीक्षण से समुद्र जल विकिरण युक्त हो जाता है, जो हानिकारक है।

1. जल संकट के आवश्यक घटक :-

जल संकट का कारण बढ़ती जनसंख्या एवं अशिक्षित समाज है बढ़ती जनसंख्या के कारण वनों की कटाई जो कि जल संकट (सूखा) का एक विशेष कारण है, पेड़ों से पानी के स्रोत पृथ्वी में ज्यादा नीचे तक नहीं जा पाते हैं जिससे जल आसानी से प्राप्त किया जा सकता है वनों की कटाई के कारण वहां कि जमीन बंजर हो जाती है जिससे वह कृषि उपयोगी भी नहीं रहती है, इसलिए जल संरक्षण के लिए पेड़ों का लगाया जाना अति आवश्यक है तथा जल स्रोतों की रक्षा करना जल संकट से बचने का एकमात्र उपाय है अतः हमें नदी तालाब झील, सरोवर आदि के जल को स्वच्छ रखना चाहिए जिससे हमें जल संकट का सामना न करना पड़े आधुनिक युग में जल संकट का जिम्मेदार कल कारखाने भी हैं जो अपने कारखाने में उपयोग होने वाले जल को दूषित करने के पश्चात नदियों के स्वच्छ जल में छोड़कर उसे भी प्रदूषित कर देते हैं जिससे स्वच्छ जल हमारे उपयोग में नहीं रह जाता है। अतः कल कारखानों को अपनी दूसरी जनों का संचय करना चाहिए एवं उन्हें दूषित रहित करके ही छोड़ना चाहिए।

4. जल-संरक्षण के उपाय:-

जिन कारणों से जल-संकट बढ़ रहा है, उनका निवारण करने से यह समस्या कुछ हल हो सकती है। इसके लिए भूगर्भीय जल का विदोहन रोका जावे और खानों-खदानों पर नियन्त्रण रखा जावे। वर्षा के जल का संचय का भूगर्भ में डाला जावे, बरसाती नालों पर बाँध या एनीकट बनाये जावे, तालाबों-पोखरों व कुओं को अधिक गहरा-चौड़ा किया जावे और बड़ी नदियों को आपस में जोड़ने का प्रयास किया जावे। जल-संरक्षण के प्रति आम जनता को जागृत करने का प्रयास किया जाए इस तरह के उपायों से जल-संकट का समाधान हो सकता है।

हमें सबसे पहले अपने रोजिन्दा जीवन में पानी की बचत करनी चाहिए अपने रोजिन्दा कार्यों को करने के लिए हम जरूरत से ज्यादा पानी इस्तेमाल करते हैं, यह एक तरह से पानी की बरबादी है अतः यह हमें बदलनी चाहिए जितने पानी की आवश्यकता हो हमें उतना ही पानी उपयोग में लेना चाहिए नहाने में बर्तन धोने में वाहन धोने में तथा हम अपने घर कि साफ सफाई में इन संरक्षित जलों का उपयोग कर सकते है। जिससे हम शुद्ध जल कि बर्बादी को कम कर सकते है। यदि हम अपनी जवाबदारी को समझकर जल का सही उपयोग करें तो जल संरक्षण में अपनी भागीदारी दे सकते है।

I. वर्षा के जल का संग्रह करें :-

वर्षा के जल का संग्रह न करना हमारी सबसे बड़ी भूल हैं वर्षा का जल सबसे शुद्ध होता है फिर भी आज कल वर्षा का जल संचित ना करके वह नदियों, गजरो, तालाबों आदि में बह जाता है जिससे बहुत बड़ा नुकसान होता है क्योंकि एक दूषित जल को शुद्ध करने में अधिक मात्रा में खर्च आता है अतः प्राकृतिक रूप से मिला हुआ शुद्ध जल हम बर्बाद कर देते है। आजकल भवन या मकान की छतें आर.सी.सी. या आर.बी.सी. तकनीक से बनाई जाती हैं, जिससे छत पर वर्षा जल का प्रभाव न पड़े अब उपरी छत



वर्षा जल का अगर हमें संरक्षण करें तो हम वर्ष में होने वाली जल कि कमी को पूर्ण कर सकते है। वर्षा के जल को हम नदी तालाब, जलाशय, झील, एवं छोटे-छोटे गड्ढों का निर्माण करके उसमें वर्षा के जल का संचय करके हम जल संरक्षण का कार्य कर सकते है। इस संग्रहित जल का उपयोग हम सिंचाई कारखाने में होने वाली धुलाई एवं अन्य उपयोगों में ला सकते हैं।

II. जल संरक्षण की आवश्यकता:-

आबादी और उद्योगों की वृद्धि के कारण ताजे जल स्रोतों की आवश्यकता है ओर बढ़ रही हैं लेकिन हमारे पास जल का सीमित संग्रह बचा है ऐसी हालात में जल-संरक्षण ही एकमात्र उपाय है जो हमें और हमारे आने वाली पीढ़ी को इस संकट से बचा सकता है जल संरक्षण में असफल होने से जल कि पर्याप्त आपूर्ति मे कमी हो सकती है, जिसके कठोर परिणाम हो सकते हैं इसमें पानी कि लागत बढ़ना कम खाद्य आपूर्ति एवं स्वास्थ्य संबंधी खतरे और

स्रोत :- Author own skill

(माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा संचालित पुस्तक विज्ञान कक्षा-10 अध्याय 12 प्रमुख प्राकृतिक संसाधन पेज नम्बर 172)

राजनीति संघर्ष शामिल है जल कि कमी के कारण पर्यावरण का संतुलन, भी बिगड़ेगा एवं वन उपवन और वन्य जीव पर संकट आ सकता है। जल पूरे सृष्टि जगत के लिए आवष्यक है और धरती पर इसका सीमित स्रोत हमें इस बात कि और इंगित करता है कि हम जल संरक्षण कि ओर ध्यान दें हमारी आने वाली पीढ़ी को एक-एक बूंद जल के लिए संघर्ष करना पड़ेगा

III.जल संचयन रूफटॉप वर्षा:-

यह जल संचयन का सबसे आसान, प्रभावशाली और बहुत ही किफायती तरीका है, जो विशेष कर बड़े-बड़े मकानों के छतों पर किया जाता है। यह तरीका अपनाने से उस क्षेत्र के भूजल स्तर में भी वृद्धि होती है। इस प्रणाली का इस्तेमाल बारिश के पानी को इकट्ठा करने के लिए किया जाता है। इस प्रणाली में वर्षा के पानी को छत की टंकी में जमा किया जाता है जहां से इसका बाद में इस्तेमाल किया जा सके इस प्रणाली का उपयोग पानी कि खपत को 40 प्रतिशत कम किया जा सकता है। हम गांव एवं शहर के बाहर तालाब बनाकर जल संरक्षण का कार्य कर सकते हैं जिससे जल संकट वाले क्षेत्रों में जल पहुंचा कर राहत का कार्य कर सकते हैं।

IV कृषि कार्य में उपयोग:-

वर्षा का जल बहुत उपयोगी होता है जो सिंचाई के कार्य में काम में लिया जा सकता है वर्षा के जल में अम्ल की मात्रा बहुत कम होती है जो भूमि के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। वर्षा के जल से सिंचाई करने पर भूमि की गुणवत्ता बढ़ जाती है जिससे फसलों की पैदावार अच्छी होती है जिससे किसानों को अधिक अनाज प्राप्त होता है।

V जलभारण प्रबंधन :-

जलभारण भूमि पर एक जल निकास क्षेत्र है, जो वर्षा के बाद बहने वाले जल को किसी नदी, झील, बड़ी धारा अथवा समुद्र में मिलाता है। यह किसी भी आकार का हो सकता है। इस उपाय के अन्तर्गत कृषि भूमि के लिए ही नहीं अपितु भूमि जल-संरक्षण, अनुपजाउ एवं बेकार भूमि का विकास , वनरोपण और वर्षाकाल के जल का संचयन कार्य किया जा सकता है।

5. पानी बचाओ धरती बचाओ:-

हमारी माँ समतुल्य प्रकृति ने हमें कई सारे उपहार प्रदान किये हैं, जिसमें से सबसे महत्वपूर्ण भेंट के महत्व को भूल चुके हैं। हम मनुष्यों द्वारा जल जैसे महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन का अधिक मात्रा में

दुरुपयोग किया जा रहा धरती में अनेक प्रकार के तरल पदार्थ समाये हुये हैं जिनमें से एक जल है जिसे कुओं, ट्यूबवेलों, हेण्डपम्पों आदि के द्वारा निकाला जाता है और सजीव प्रजातियों का जीवन निर्वहन किया जाता है तथा वर्तमान युग में सजीव प्रजातियों को जल कमी का सामना करना पड़ रहा है अगर हम लोग इसी तरह जल को व्यर्थ बहाते रहेंगे तो एक दिन हमें जल कि एक-एक बूँद के लिए कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा अगर ऐसा होता रहा तो महज कुछ दशकों में ही पेड़-पौधों, शुद्ध जल एवं पशु-पक्षी देखने के लिए नसीब नहीं होंगे हालांकि यह अत्यन्त हर्ष कि बात है कि हमारे देश के राष्ट्रीय विज्ञान केन्द्र ' इसरो के द्वारा चंद्रयान के उपकरण के माध्यम से चंद्रमा पर जल कि उपस्थिति का पता लग पाया लेकिन धरती पर जल प्रदुषण, अनावश्यक खर्च एवं अन्य कारण से प्रतिदिन ग्रस्त हो रहा है, यह दुःख कि बात है कि फैक्टरियों, कचरों व व्यापक यातायात के कारण तमाम अवशेष समुद्रों एवं नदियों में गिरते हैं जिससे नदियों व समुद्रों का पानी दुशित हो जाता है जों हमारे साथ-साथ जीव जन्तुओं के लिए भी घातक है हमें जल को बचाने के साथ-साथ पर्यावरण को भी बचाना होगा जिससे आने वाली पीढीयों के लिए जल को सुरक्षित रखा जा सकता है जिससे जल को भविष्य के लिए बचाया जा सकता है



स्रोत :- (माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा संचालित पुस्तक विज्ञान कक्षा
- 10 अध्याय-1 दूषित जल के प्रभाव पेज नम्बर 03)

6. अजमेर जिले में पेयजल आपूर्ति :-

I .बीसलपुर परियोजना :-

1997-98 के प्रारम्भ में राजस्थान की इस बहुउद्देश्यीय परियोजना को टोंक जिले में टोडारायसिंह कस्बे के पास बीसलपुर स्थान पर बनास नदी पर बाँध बनाकर शुरू किया गया है। इस परियोजना के माध्यम से सवाईमाधोपुर जिले को सिंचाई, टोंक के 256 गाँवों में सिंचाई सुविधा उपलब्ध होती है तथा जयपुर शहर तथा अजमेर के केकड़ी, सरवाड़, ब्यावर एवं रास्ते में स्थित गाँवों को पेयजल की आपूर्ति होती है।

7. मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन योजना :-

राजस्थान में भूमिगत जल का स्तर निरन्तर गिर रहा है तथा प्रचलित जल स्रोतों की दूर्दशा हो गयी है। बाँधों में मिट्टी की गाद बढ़ गई है। इन सभी कारणों से राज्य में जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है। अतः इस संकट को दूर करने हेतु राज्य में जल स्वावलम्बन की आवश्यकता हुई। इसमें स्थानीय स्तर पर जल बचत एवं जल के खर्च को व्यवस्थित कर वर्षा के जल का स्थानीय स्तर पर संरक्षण एवं प्रबन्धन किया जाता है। इसी क्रम में राजस्थान सरकार ने मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन योजना प्रारम्भ की गई है इसमें सरकार द्वारा भामाशाहों के सहयोग से जल का प्रबंधन किया गया है। इस योजना में भू-जल स्तर में सुधार एवं गुणवत्ता से सुधार किये जाएंगे। प्राचीन स्रोतों जैसे कुँए, तालाब, नाड़ी तथा लुप्त हो रहे स्रोतों को पुनः जीवित करने का कार्य किया जाएगा पंचायत स्तर पर तालाबो, नाड़ियों एवं कुँओं की खुदाई एवं मरम्मत का कार्य किया जाएगा। जल स्रोतों के जल प्राप्ति क्षेत्रों में आने वाले अवरोधों को हटाकर जल प्राप्ति के मार्ग दुरुस्त करने का कार्य किया जाएगा यह योजना 4 वर्षों तक चलाई जाएगी जिससे 21,000 गाँव लाभान्वित होंगे इस योजना में गैर सरकारी संगठनों, धार्मिक ट्रस्टों अप्रवासी ग्रामीण भारतीयों व स्थानीय ग्रामीणों का सहयोग लिया जाएगा

8. भारत सरकार व राज्य सरकार द्वारा जारी योजना

वैसे तो आप सभी को पता है कि राजस्थान में पानी की सबसे ज्यादा किल्लत है और पानी का स्तर भी बहुत नीचे है और यहाँ पर बारिश भी बहुत कम होती है जिसके कारण ग्रामीण क्षेत्रों में पानी का सबसे ज्यादा दिक्कत होती है जिसके कारण किसान कृषि भी नहीं कर पाते है क्योंकि कृषि करने के लिये पानी की बहुत ज्यादा जरूरत होती है जिसके कारण राजस्थान सरकार ने फार्म पौण्ड स्कीम राजस्थान शुरू की है जो कि प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत चलाई जा रही है किसान खेत तालाब (तलाई) अनुदान योजना के अंतर्गत किसानो को वर्षा का जल संरक्षण व उसको सुरक्षित करने के लिये जिससे उस पानी को सिंचाई या किसी अन्य काम में उपयोग लिया जा सके।

किसानों के लिये कृषि उत्पादन बढ़ाने व जल की भराव के लिये भारत सरकार व राज्य सरकार द्वारा फार्म पौण्ड (खेत तलाई) की योजना चलाई गई है जो राष्ट्रीय कृषि विकास योजना है जो वर्षों के जल को इकट्ठा करने के लिये सभी जिलों के किसानों के लिये उपरोक्त योजना बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी है।

सभी काश्तकारों को लागत का 60 प्रतिशत अधिकतम राशि करीबन 60,000/-रूपये कच्चे पौण्ड के लिये तथा 90,000/-रूपये पक्के पौण्ड के लिये अनुदा देय होगा।

इस योजना में किसानों के नाम पर भूमि का कम से कम कृषि योग्य जोत भूमि 0.3 हैक्टेयर का स्वामित्व होना चाहिए।

इस योजना के लिये आवेदन प्रक्रिया कृषक कियोस्क के माध्यम से, कर सकता है कृषक नजदीकी ई-मित्र केन्द्र पर जाकर आवेदन कर सकता है। हस्ताक्षरयुक्त मूल आवेदन को भरकर मय दस्तावेज कियोस्क पर जमा करा कर रसीद प्राप्त कर सकता है, आवेदक मूल आवेदन पत्र को ऑन-लाईन ई-प्रपत्र में भरेगा एवं आवश्यक दस्तावेज को स्कैन कर अपलोड करवा सकता है।

9. पीने योग्य जल के गुण :-

जल में आँखों से दिखने वाले कण और वनस्पति नहीं हो, हानि पहुँचाने वाले सूक्ष्म जीव नहीं हो, जल का पी0एच0 संतुलित हो, जल में पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन घुली हो। हमारा शरीर कई तरह की जिम्मेदारियों निभाता है जल इस काम में शरीर की मदद करता है शरीर की समस्त उपापचयी क्रियाएँ जल के द्वारा ही सम्पादित होती हैं। इसलिए डॉक्टर भी अक्सर मशवरा देता है कि एक दिन में कम से कम आठ गिलास पानी पीना चाहिए। यदि आप शारीरिक श्रम ज्यादा करते हो तो आपको ज्यादा मात्रा में पानी पीना चाहिए। सही मात्रा में पानी पीने से शरीर का उपापचय सही तरीके से काम करता है। प्रत्येक दिन 8-10 गिलास पानी पीने से शरीर में रहने वाले जहरीले पदार्थ बाहर निकल जाते हैं, जिससे शरीर रोग मुक्त रहता है,

स्त्रोत :-

(कक्षा-12 सामाजिक विज्ञान एन0सी0आर0टी0 पास-बुक अध्याय-8 पेज नम्बर- 248)

शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी रहने से शरीर में चुस्ती और उर्जा बनी रहती है, थकान का अहसास नहीं होता है पानी से शरीर में रेषों (फाइबर) की पर्याप्त मात्रा कायम रहती है, जिससे शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है और बीमारियों होने का खतरा कम रहता है। प्रचूर मात्रा में पानी पीने से शरीर में किसी प्रकार की एलर्जी होने की आषंका कम हो जाती, साथ ही फेंफड़ों में संक्रमण, अस्थमा और आंत की बीमारियों आदि भी नहीं होती है। नियमित भरपूर पानी पीने से पथरी होने का खतरा भी टला रहता है, पर्याप्त मात्रा में पानी पीने वाले को सर्दी जुकाम जैसे रोग नहीं घेरते है।

10. राजस्थान में जल संरक्षण के रूप :-

बावड़ी :-

यह चतुष्कोणीय, गोल व वर्तुल आकार में निर्मित जल-स्त्रोत है जिसके प्रवेश मार्ग से मध्य तक ईंटों तथा कलात्मक पत्थरों का प्रयोग किया जाता है। इसके आगे आँगननुमा भाग होते हैं तथा इन भागों तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ होती है। इन सीढ़ियों पर कलात्मक मेहराब, स्तम्भ व झरोखें होते हैं इन झरोखों में स्थानीय जल देवता की मूर्तियाँ होती हैं। बावड़िया राजस्थान राज्य के सभी जिलों में मिलती हैं।

तालाब :-

तालाब का निर्माण ढालू भाग के समीप कर इसमें वर्षा जल को एकत्रित किया जाता है। ये पशु एवं मानव के पेयजल का स्त्रोत हैं। इन तालाबों के निर्माण में धार्मिक व सामाजिक भावना जुड़ी रहती हैं। इस कारण इनका संरक्षण व सुरक्षा आसानी से हो जाती है

झीलें :-

राज्य में बहते जल के संरक्षण हेतु झीलें सर्वाधिक प्रचलित स्त्रोत है। इनमें सिंचाई हेतु नहरें निकाली जाती है, साथ ही पेयजल का भी मुख्य स्त्रोत है। यह झीलें जहाँ स्थानीय आर्थिक व सामाजिक विकास में सहायक रहीं। वहीं अकाल तथा सूखे में जीवनदायिनी रहीं है।

नाड़ी :-

पश्चिमी राजस्थान में पाए जाने वाली नाड़ी तालाब का छोटा रूप होती है। यह 4 से 5 मीटर गहरी होती है जिसमें रेतीले मैदानी भाग में वर्षा के जल

को एकत्रित किया जाता हैं। इसमें छोटा आकार, कम गहराई तथा वर्षा जल के साथ आने वाली मिट्टी के कारण वर्षा जल अल्पकाल के लिए इकट्ठा होता है। इन नाड़ियों की मिट्टी को प्रतिवर्ष निकाल कर इन्हें गहरा किया जाता है।

बेरी या छोटी कुई :-

ये पश्चिमी राजस्थान में तालाब या खडीन में आजोर भूमि में 5 से 6 मीटर गहरा गड्ढा खोदकर बनाई जाति है। इसकी दीवारों को पत्थर से बनाया जाता है।

टॉका :-

यह पश्चिमी राजस्थान में परम्परागत जल संग्रहण एवं संरक्षण स्रोत है जो कि प्रत्येक घर या खेत में भूमि में 5 से 6 मीटर गड्ढा खोदकर बनाया जाता है इसमें वर्षा के जल को संग्रहित किया जाता है। इसके उपरी भाग को पत्थरों आदि से ढंक दिया जाता है। इसमें घरों की छत तथा आगोर से आने वाले वर्षा जल को संग्रहित किया जाता है। इसके आन्तरिक भाग में राख व बजरी का लेप कर जल रिसाव नली के कटाव को रोका जाता है।

जोहड़ :-

इसका रूप सामान्यतः टॉके के समान ही होता है। यह शेखावटी क्षेत्र तथा हरियाणा में वर्षा जल संग्रहण का साधन है। इसका उपरी भाग टॉके से बड़ा तथा गोलाकार और खुला हुआ होता है।

खडीन :-

यह मध्यकाल में जैसलमेर के पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा अपनाई गई जल संरक्षण एवं प्रबन्धन की तकनीक है। इसमें पहाड़ी भागों में वर्षा काल में बहते हुए जल को ढालू भागों पर कच्ची अथवा पक्की मेड़ या दीवार बनाकर रोका जाता है तथा अतिरिक्त जल को इस दीवार के एक भाग से निकाल दिया जाता है जिससे इससे लगती भूमि को जल मिल सके। इस खडीन भूमि में मिट्टी में नमी रहने से रबी तथा खरीफ की दोनों फसलें आसानी से पैदा होती है तथा इसके किनारे से ग्रीष्मकाल में पेयजल मिलता रहता हैं।

स्रोत :- कक्षा – 12 सामाजिक विज्ञान एन0सी0ई0आर0टी पास—बुक्स

अध्याय—8 पेज नम्बर – 249

भू-जल रिचार्ज :-

जहाँ बूंद गिरे उसे वही समेट ली की तर्ज पर एक नारा दिया गया कि "खेत का पानी खेत में और गांव का पानी गांव में"। इस नारे को साकार करने के लिए यह आवश्यक है कि वर्षा के पानी का समुचित उपयोग किया जाए।

निष्कर्ष:-

भावना का प्रसार हो ताकि सभी सजीव प्राणीयों को बचाय जल को जीवन का आधार मानकर समाज में नयी जागृति लाने का प्रयास किया जावे। "अमृतंजलम्" जैसे जन-जागरण के कार्य किये जावे जनता में जल-चेतना की जागृति लाने से जल-संचय एवं जल-संरक्षण किया जा सकें हम मानव इतने कम उपलब्ध जल के स्रोतों का इस तरह से दोहन कर रहे है कि जल्द ही हमारे सामने जल संकट अपने विकराल रूप में मौजूद होगा। हमारे उपयोग का लगभग सारा जल नदियों, झीलों या भूमिगत स्रोतों से आता है जल के विभिन्न प्रकार के स्रोत हैं

किसी भी देश की वृद्धि और विकास के लिए प्रभावी जल प्रबंधन बहुत आवश्यक है। भारत जैसी विशाल आबादी वाले देश, जहां पर नदियों, झीलों और अन्य पारंपरिक जल स्रोतों का व्यापक नेटवर्क मौजूद है, के लिए अपने जल के वितरण को विनियमित करने और तीव्र शहरीकरण और औद्योगिककरण के कारण इन जल स्रोतों को प्रदूषित होने से बचाने के लिए जैसा कि हाल ही में देखा गया है, एक सक्षम तंत्र विकसित किया जाना आवश्यक है यदि पर्याप्त आयोजना और सावधानी के साथ जल संबंधी समस्या पर पर्याप्त रूप से ध्यान नहीं दिया गया, तो आगामी वर्षों में पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व को ही खतरा पैदा हो जायेगा। जल की बर्बादी पर रोक लगाने और जल अभाव वाले क्षेत्रों को लाभान्वित करने के लिए अतिरिक्त जल का दोहन करने के लिए मानवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता है। उत्पादकता बढ़ाने के लिए जल की प्रत्येक बूंद का विवेकपूर्ण तरीके से इस्तेमाल किया जाना चाहिए और जल के लापरवाही से दुरुपयोग किये जाने पर रोक लगाई जाए। इस बात को ध्यान में रखते हुए कि हम अधिक वर्षा नहीं करा सकते हैं हमें सामान्य रूप से होने वाली वर्षा के जल को संचयित करने की प्रभावी रणनीति अपनानी चाहिए। ऐसा करके हम जल के अभाव में उत्पन्न होने वाली अराजकता से बच सकते हैं। जल संबंधी चुनौतियों

पर ध्यान देने के लिए रणनीतियां बनाने में जल को सीमित पारिस्थितिकीय संसाधन मानना अत्यावष्क है जिसके प्रबंधन में इस देश के लोगों की पूर्ण भागीदारी अनिवार्य होनी चाहिए। अब समय आ गया है जब हमें न केवल इस महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन को प्रदूषित करने वालों के विरुद्ध कार्यवाही करनी चाहिए। अपितु एकीकृत पारिस्थितिकीय पुनरुद्धार मॉडल जिसके अंतर्गत वानिकी और भू-संसाधनों की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है के दायरे के अंतर्गत जल प्रबंधन पर भी विचार करना चाहिए। जल संचयन और भंडारण पर भी पहले की अपेक्षा अधिक गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए। इस संदर्भ में हम सबके लिए गंगा कार्य योजना के विभिन्न चरणों और संबंधित योजनाओं पर सरकारी पहलों को सफल बनाने की दिशा में कार्य करना अनिवार्य है।

हमारे किसानों, उद्योगों और विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में बढ़ती जनसंख्या की लगातार बढ़ी मांग को पूरा करने के लिए हमारे जल संसाधनों का संरक्षण, पुनर्भरण और प्रबंधन किए जाने की आवश्यकता है। सस्ती, आसान और पारंपरिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करके बनाए गए पारंपरिक जलाशयों से प्रभावित क्षेत्रों के भूजल स्तर को बढ़ाने में वस्तुतः काफी आश्चर्यजनक परिणाम सामने आए हैं। हम ग्रामीण समुदायों को अपने प्राकृतिक जल संसाधनों का प्रबंधन करने हेतु जल संचयन ढांचों का निर्माण कर जल संरक्षण की अपनी प्राचीन परंपराओं को अपनाने के लिए संगठित करके अपनी दीर्घकालिक जल प्रबंधन समस्याओं का आसानी से समाधान पा सकते हैं। राष्ट्र के समक्ष आ रही इस गंभीर चुनौती सामना करने के लिए हमें अपने सबसे निचले स्तर के लोगों के अनुभव का इस्तेमाल करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में ग्रामीण समुदायों को संगठित करने और उन्हें अपनी पारंपरिक जानकारी का स्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित किए जाने से काफी सहायता मिल सकती है।

Author own skill